प्रातः सभा 28-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः रूहानी बच्चों से रूहानी बाप पूछ रहे हैं। यह तो बच्चे जानते हैं बाप आया है हम बच्चों को अपने घर ले जाने लिए। अभी घर जाने की दिल होती है? वह है सभी आत्माओं का घर। यहां सभी जीवात्माओं का घर एक नहीं है। सभी का अपना2 घर है। अभी बाप पूछते हैं वापस घर जिसको मुक्तिधाम-शांतिधाम कहा जाता है वहां चलना है? यह तो समझते हो बाबा आया हुआ है निमंत्रण पर। बुलाया है बाप को हमको घर अर्थात शांतिधाम में ले चलो। अभी बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो। हे आत्माएं तुम पतित कैसे जा सकेंगी। पावन तो जरूर बनना है। अभी घर चलना है। और तो कोई बात ही नहीं कहते हैं। भक्तिमार्ग में तुमने इतना समय पुरुषार्थ किया है, किसके लिए? मुक्ति के लिए। तो अभी बाप पूछते हैं घर चलने का बिचार है? बच्चे कहते हैं बाबा इसके लिए ही तो इतनी भक्ति की है। यह भी जानते हो जो भी जीवात्माएं हैं सभी को ले जाना है। परन्तु पवित्र बनकर घर जाना है। फिर पवित्र आत्माएं ही पहले2 आती हैं। अपवित्र आत्माएं तो घर में रह न सकें। अभी 4-5 सौ करोड़ हैं। सभी को घर जरूर जानाहै। क्योंकि असल तुम सभी अपने घर के रहनेवाले हो। जिसको शान्तिधाम वा वानप्रस्त कहा जाता है। हम आत्माओं को पावन बन पावन शांतिधाम जाना है। बस। कितनी सहज बात है। वह है पावन शान्तिधाम आत्माओं का, वह है पावन सुखधाम जीवात्माओं का, यह है पतित दुःखधाम जीवात्माओं का। इसमें मुंझने की तो बात ही नहीं। शांतिधाम जहां सभी पवित्र आत्माएं रहती हैं। वह है ही आत्माओं की पवित्र दुनिया। वायसलेस इनकारपोरियल वर्ल्ड। यह पुरानी दुनिया है सभी जीवात्माओं की। सभी पतित हैं। अभी बाप आये हैं। आत्माओं को पावन बनाकर पावन दुनिया शान्तिधाममें सभी को ले जावेंगे। फिर जो राजयोग सीखते हैं वही पावन सुखधाम में आवेंगे। यह तो बहुत सहज है। इसमें कोई भी बात का बिचार नहीं करनाहै। बुधि से समझना है हम आत्माओं का बाप आया हुआ है। हमको पावन शांतिधाम ले जावेंगे। वहां जाने का रास्ता जो हम भूल गये हैं थे सो अभी बाप ने बताया है। कल्प2 में ऐसे ही आकर कहता हूं हे बच्चों मुझ अपने बाप को याद करो। वही सर्व कस सदगति दाता एक ~~सर्व~~ सद्गुरु है। वही आकर के बच्चों को श्रीमत अथवा पैगाम देते हैं कि बच्चों अभी तुमको क्या करनाहै। आधा कल्प तुमने बहुत भक्ति की है। दुःख उठाया है। खर्चा करते2 कंगाल बन गये हो। आत्मा भी सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गई है। बस। यह थोड़ी बात समझने की है। अब घर चलना है वा नहीं? हां बाबा चलना जरूर है। वह हमारा स्वीट सायलेन्स होम है। यह भी समझते होबरोबर हम अभीपतित हैं। इसलिए अपने घर जा नहीं सकते। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। कल्प2 यही पैगाम देता हूं। अपन को आत्मा समझो। यह देह तो खलास हो जाती है। बाकी आत्माओं को पावस जानाहै। आत्माएं वहां शरीर रूपी वस्त्र साथ नहीं रहती है। उनको कहते हैं निराकारी दुनिया। सभी निराकारी आत्माएं वहां रहती हैं। वह घर है हम आत्माओं का। निराकार बाप भी वहां ही रहते हैं। बाप आते हैं सभी से पिछाड़ी में। क्योंकि फिर सभी को वापस ले जाने वालाहै। एक भी पतित आत्मा रहनी न है। इसमें कोई मुंझ वा तकलीफ की बात नहीं। गाते भी हैं हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाकर साथ ले चलो। सभी का बाप है ना। फिर जब हम नई दुनिया में पार्ट बजाने आते हैं तो बहुत थोड़े रहते हैं। बाकी इतने करोड़ आत्माएं कहां जाकर रहती है। इसमें 84 के चक्र को समझाना है। यह भी जानते हो सतयुग में हम थोड़े जीवात्माएं थे। छोटा झाड़ था। फिर बृधि को पाया है। झाड़ में अनेक धर्मों का वैराईटी है। उनको ही कल्प-बृक्ष कहा जाता है। उनकी आयु 5000वर्ष है। यह भी हिसाब बाप ने बताया है। कुछ भी अगर न समझते हो तो पूछ सकते हो। बाबाहम 5000वर्ष कैसे माने। अरे बाप तो सत्य ही बताते हैं। चक्र का हिसाब भी बताया है। 1250 वर्ष का एक युग होता है। आधा कल्प2 के बाद फिर और धर्म स्थापन होते हैं। इनका भी हिसाब चाहिए ना। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते। समझ कुछ भी नहीं। उल्टी-सुल्टी बातें बुधि में बिठाये और ही पत्थर बुधि बन पड़े हैं। बाबा आकर पत्थर बुधि से पारस बुधि बनाते हैं। इसमें

भक्ति-मार्ग की कोई भी वेद-शास्त्र आद की दरकार नहीं। भक्ति-मार्ग भी पास्ट हो गया। इस कल्प के संगम पर ही बाप आकर देवी राजधानी स्थापन करते है। जो अभी नहीं है। सतयुग में फिर एक ही देवीराजधानी होगी। इस समय तुमको रचयिता औरसारी रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान मिलता है। फिर यह 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगा। बाप कहते हैं मैं कल्प2 के संगम पर आता हूं। नई दुनिया की स्थापना करता हूं। पुरानी दुनिया खत्म हो जाती है ड्रामा पलैन-अनुसार। नई से पुरानी, फिरपुरानी से नई बनती है। इनके चार भाग भी पूरे हैं। जिसको स्वस्तिका भी कहते हैं। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। गणेशायनमः कहते हैं, अर्थ कुछ नहीं। सूंढ़ वालागणेश तो कोई होता ही नहीं। भक्ति मार्ग में यह जैसे मेश मश गुड्डियों का खेल खेलते रहते हैं। अथाह चित्र हैं। दीपमाला पर खास दुकान निकालते हैं। उनका अनेक चित्र रखते हैं। अभी तुम समझ गये हो एक तो है शिव बाबाऔर हम बच्चे। फिर यहां आओ तोल0ना0 का राज्य, फिर राम सीता का राज्य। बस। फिर बाद में और2 धर्म आते हैं। जिन से तुम बच्चों का कनेक्शन ही नहीं। वह अपने2 समय पर आते हैं फिर सभी को वापस जाना है। तुम बच्चों को भी अभी घर जाना है। यह सारी दुनिया विनाश होनीहै। अभी इसमें क्या रहना है। इस दुनिया से दिल नहीं लगती। दिल लगानी है एक माशुक साथ। वह कहते हैं मुझ एक साथ दिल लगाओ। तो पावन बनेंगे। अभी बहुत गई थोड़ी रही ... टाईम जाता रहता है। आठ वर्ष से फिर 7वर्ष-फिर 6फिर 5 कहेंगे। योग में न रहे होंगे तो फिर बहुत पछतावेंगे। सजा खावेंगे। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। यह भी तुमको अभी मालूम हुआ है। घर जाने लिए ही सभी माथा मारते हैं ना। बाप भी घर में ही मिलेगा। सतयुग में तो नहीं मिलेगा। मुक्तिधाम जाने लिए मनुष्य कितना मेहनत करते हैं। उसको कहा जाता है भक्ति मार्ग। बाप समझाते हैं अभी भक्ति मार्ग खलास हो ना है। ड्रामा अनुसार। अभी मैं तुमको घर ले जाने आया हूं। जरूर ले जाऊंगा। जितना जो पावन बनेंगे उतना ऊंच पद लेंगे। इसमें मुंझने की बात ही नहीं। बाप एक ही बात कहते हैं मुझे याद करो। मैं गैरन्टी करता हूंतुम बिगर सजा खायेघर चले जावेंगे। याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। अगर याद नहीं करेंगे तोसज़ा खानी पड़ेगी। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। हर 5000वर्ष बाद मैं आकर यह समझाता हूं। मैं अनेक बार आया हूं तुमको वापस ले जाने। तुम बच्चे ही हार जीत का पार्ट बजाते हो। फिर मैं आया हूं तुमको ले जाने। यहहै पतित दुनिया। इसलिए गाते भी हैं हे पतित पावन आओ। हम विकारी पतित हैं। आकर निर्विकारी पावन बनाओ। उनको कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। यह है विकारी दुनिया। अभी तुम बच्चों को सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। जो पीछे आते हैं वह सजा खाकर जाते हैं। इसलिए फिर आते भी हैं ऐसी दुनिया (त्रेता) में जहां दो कला कम हो जाती। उनको पूरा निर्विकारी नहीं कहेंगे। इसलिए अभी पुरुषार्थ कर पूरा करना चाहिए। ऐसा न हो कम पद हो जाये। भल रावण राज्य नहीं हैपरन्तु पद तो नम्बरवार है ना। आत्मा में खाद पड़ती है तो फिर उसको शरीर भी ऐसा मिलेगा। ऐसे नहीं आत्मा पतित बनती है। नहीं। आत्मा में खाद पड़ती है। तो गोल्डेन एजेड से सिलवरएजेड बन जाते हैं। चांदी की खाद आत्मा में पड़ती है। फिर दिन प्रति दिन जास्तीछीछी खाद पड़ती है तम्बा, लोहा की। बाप बहुत अच्छी रीत समझाते हैं। कोई नहीं समझते हैं तो हाथ उठाओ। जिसने 84 का चक्र खाया हैउनको ही समझावेंगे। बाप कहते हैं इनके 84 जन्मों के अन्त में मैं आकर प्रवेशकरता हूं। यह दुनिया ही पतित है। आत्मा औरशरीर दोनो ही पतित है। तुम्हारा यह जो दादा है इनके बहुत जन्मों केअन्त में मैं प्रवेश करता हूं। इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। तो ब्रह्मा क्या हुआ। वही बहुत जन्मों के अन्त मेंपतित बन गया है। फिर मैं पतित-पावन इनके पतित शरीर में आता हूं, इनको पावन बनाता हूं। कितना क्लीयर कर समझाते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। गीता का ज्ञान तो तुम ने बहुत सुना, सुनाया। परन्तु उन से भी तुमने सदगति को नहीं पाया। बहुत सन्यासियों ने तुमकोमीठी2 आवाज़ से शास्त्र सुनाई। जिस आवाज़ को सुन कर बड़े2 आदमी जाकरइकट्ठे होते हैं।

कनरस है ना। भक्तिमार्ग है ही कनरस। इसमें तो आत्मा को बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग अभी पूरा होता है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को ज्ञान देने आया हूं। जो कोई नहीं जानते। मैं ही ज्ञान सागर हूं। ज्ञान कहा जाता है नालेज को। तुमको सभी कुछ पढ़ाते हैं, 84 का चक्र भी समझाते हैं। तुम्हारी बुधि में सारी नालेज है। मूलवतन से सूक्ष्मवतन, को करास करस्थूल वतनमें आते हो। पहले2 है ल0ना0 फिर उन्हों की डिनायस्टी ल0ना0 का राज्य। फिर राम-~~सती सीता~~ सीता का। वह भी डिनायस्टी चलती है। वहां विकारी बच्चे नहीं होते। रावण-राज्य ही नहीं। योगबल से सभी कुछ होता है। तुमको मा0 होता है कब बच्चा होने का है। गर्भ महल में जाना है। खुशी से जाते हैं। यहां तो मनुष्य कितना रोते-चिल्लाते हैं। यहां तो गर्भ जेल में जाते हैं। वहां रोने-पीटने की बात नहीं। शरीर तो बदलना जरूर है। जैसे सर्प का मिसाल। इसमें मुंझने की बात ही नहीं। जास्ती कुछ पूछने का रहता नहीं है। एकदम पावन बनने लग जाता है। बाप को याद करना मुश्किल होता है क्या। बाप के सामने बैठे हो ना। मैं तुम्हारा बाप तुमको सुख का वरसा देता हूं। तुम एक अन्तिम जन्म पवित्र नहीं रह सकते हो। यहां अच्छी रीत समझते भी हैं फिर घर जाकर स्त्री ~~का~~ आदि का मुंह देखते हैं तो माया खा जाती है। बाप कहते हैं कोई में भी ममत्व न रखो। वह तो सभी कुछ खत्म होना है। याद तो एक बाप की ही रखना है। चलते-फिरते बाप और अपने राजधानी को याद करना है। देवीगुण भी धारण करनी है। सतयुग में यह गंदी चीजें मांस अण्डा आदि होता ही नहीं। बाप कहते हैं विकारों को भी छोड़ दो। हम तुमको विश्व की बादशाही देते हैं। युगल बन गन्धर्वी विवाह करपवित्र रह दिखाओ। कमाल है। कितनी आमदनी होती है। तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। सिर्फ एक जन्म पवित्र रहने सेकितनी भारी आमदनी होती है। भल इकट्ठे भी सो जाओ। ज्ञान-तलवार बीच में हो। पवित्र रह दिखाया तो सब से ऊंच पद पावेंगे। क्योंकि बाल-ब्रह्मचारी ठहरे। फिर नालेज भी ग्रहण। औरों को भी आप समान बनाना है। सन्यासियों को दिखाना है कैसे हम शादी कर के भीपवित्र रहते हैं। तो समझेंगे इनमें तो बड़ी ताकत है। बाप कहते हैं यह एक जन्म पवित्र रहने से 21 जन्म तुम विश्व के मालिक बनेंगे। कितनी बड़ी प्राईज मिलती है। तो क्यों नहीं पवित्र रह दिखावेंगे। आजकल तो बूढ़े को भी विकार में गिरने दिल होती है। 60 वर्ष के बाद भी बच्चा पैदा करते हैं। आगे चल बहुत ~~गन्धर्व~~ ब्र गन्धर्वी विवाह भी कर के दिखावेंगे। ऐसे भी बहुत निकलेंगे। ऐसे भी बहुत निकलेंगे। टाईम ही बाकी थोड़ा है। आवाज़ भी होता रहेगा। अखबारों में भी पड़ेगा रिहलसल भी देखो ना। क्या हाल हो गया है। अभी तक हास्पिटल में पड़े हैं। अभी तो ऐसा बारूद आदि बनाते हैं जो कोई तकलीफ नहीं। फट से खत्म। और भी रिहलसल होकर फाईनल होगा। देखेंगे से मरते हैं या नहीं। फिर और युक्ति रचेंगे। अभीसे ही कहते हैं ऐसा बारूद है जो उनके बांस आने से ही खत्म हो जावेंगे। हास्पिटल आदि होगी ना। कौन बैठ खिजमत करेंगे। कोई ब्राह्मण आदि खिलाने वाला न होगा। बाम छोड़ा और खलास। अर्थक्वेक मे सभी दब जावेंगे। देरी नहीं लगेगी। यहां कितने ढेर मनुष्य हैं। सतयुग में होते हैं बहुत थोड़े। तो इतने सभी कैसे विनाश होंगे आगे चल देखना। वहां तो 9लाख कहते हैं। फकीर तुम हो। साहब भी तुमको प्यारा है। अभी सभी को छोड़ अपने को आत्मा समझ लिया है ऐसे फकीरों को बाप प्यारा लगता है। सतयुग में बहुत छोटा सा झाड़ होगा। विकारी झाड़ के पत्ते चले जावेंगे। बाकी निर्विकारी रहेंगे। पीछे उसको सतयुग कहेंगे। तब तक संगम युग होगा। बातें तो बहुत ही समझाते हैं। जो भी एक्टर्स हैं सभी आत्मायें अविनाशी हैं। अपना पार्ट बजाती आती हैं। कल्प2 तुम ही आकर स्टुडेन्ट बन कर बाप से पढ़ते हो। जानते हो बाबा हमको पवित्र बनायेसाथ में ले जावेंगे। बाबा भी ड्रामा अनुसार बांधायमान है। सभी को वापस जरूर ले जावेंगे। इसलिए नाम ही है पाण्डव ~~आर्मी~~। सेना। वह कौरव क्या कर रहे हैं औरतुम पाण्डव क्या ~~कर~~ रहे हैं। तुम बाप से राजभाग ले रहे हो कल्प पहले मिसल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपना राजभाग ले रहे हो। ड्रामा की टिक2 होती रहती है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

::-ओमशान्ति*::*